5:30 PM 0.0KB/s 4G 3G 27
21 b l j shiksha k...

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

शिक्षा की अनमोल अन्तः प्रेरणा

प्रो. बी. एल. जैन
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ, नागौर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

मन कुलषित भावों से भरा पड़ा है, ये भाव बाहर से परिलक्षित नहीं होते लेकिन व्यवहार व क्रियाओं में अवलोकित हो रहे हैं। मन में तामसिक व राजसिक भावों की मात्रा बढ़ी है। मन में आवेग, आवेश, घृणा, नफरत, ईर्ष्या, कलह, संघर्ष, असत्य, बेईमानी का कचरा भरा पड़ा है। ज्ञान की अनमोल अन्तः प्रेरणा से इन्हें दूर किया जा सकता है। सकारात्मक सोच, व्यवहार की शालीनता, मधुर वाणी, भावजागृति भाव की शुद्धता, निर्मलता व पावनता बनायें, आत्मबोध की शिक्षा, स्वयं पर चिन्तन व मनन करें, स्वाध्याय करें, राग-द्वेष के भाव से ऊपर उठें, आध्यात्मिकता का विकास करें, शुद्धता का बोध हो, मौलिकता की पहचान करावें जिससे शिक्षा की सार्थकता इन अन्तः प्रेरणा से सार्थक हो सकेगी।

मुख्य शब्द - *शुद्धि, ज्ञान, व्यवहार, भाव, आत्मबोध, स्वयं, अन्तरात्मा, शुद्धता, मौलिकता*

प्रस्तावना

अन्तः शुद्धि से जीवन शुद्धि

आज शिक्षार्थी के अन्दर कुंठा, अवसाद, चिन्ता, भग्नाशा, तनाव, व्याकुलता, व्यग्रता की मात्रा अधिक है। बाहर से उसके अन्दर ये भाव परिलक्षित नहीं होते लेकिन अन्दर कुलषित भावों से भरा हुआ है। विद्यार्थी अन्तशुद्धि करें, जिससे जीवन शुद्धि हो सके। जीवन मूल्यवान है, जिस शिक्षा से शुद्धता, विशुद्धता, पावनता, पवित्रता, निर्मलता के भाव आभा में अवतरित होने चहिए, वे नहीं हो पा रहे हैं। अधिकांश विद्यार्थियों का मन कामना, लालसा, वासना, तृष्णा में विचरण करता रहता है। मन में एकाग्रता, तन्मयता, समर्पण, श्रद्धा, शालीनता, सौहार्द्र के भाव अल्प मात्रा में होते जा रहे हैं। जब तक अन्दर सात्विक भाव नहीं होगा, तामसिक व राजसिक भावों का परिमार्जन, परिष्कृत व परिशोधन नहीं कर सकेंगे। कैसे अन्तःशुद्धि से जीवन शुद्धि आ पायेगी ? किताबी ज्ञान से ज्यादा शिक्षार्थी में अच्छे भाव, अच्छे विचार, अच्छे संस्कार होने चाहिए। शिक्षार्थी में आवेग, आवेश, अमनस्यक, घृणा, नफरत, बेईमानी, असत्य, चोरी, लालच आदि का भाव भरा हुआ कचरा साफ करना चाहिए। हम बाहर की सफाई तो कर देते हैं, लेकिन अन्दर की सफाई नहीं कर पा रहे हैं। बाहर की सफाई से ज्यादा अन्दर की सफाई होना आवश्यक है।

ज्ञान नहीं जलता

आग से शरीर जल जाता है, लेकिन ज्ञान कभी भी नहीं जलता है। ज्ञान व चरित्र में चरित्र शरीर के साथ समाप्त हो जाता है लेकिन ज्ञान आत्मा के साथ रहता है ज्ञान कभी समाप्त नहीं होता है। ज्ञान व्यक्ति को हमेशा काम आता है, वह हर पथ पर रास्ता दिखाता है। ज्ञान जड़ है, पत्ते

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 087
17 सितम्बर 2019